IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 19, Issue 1, Ver. I (Jan. 2014), PP 100-101
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

पिछवई चित्रण परम्परा तकनीक व भावरूप

डॉ. गगन बिहारी दाधीच
प्राध्यापक–चित्रकला
एस. एम. बी. राजकीय महाविद्यालय
नाथद्वारा (राजस्थान)

कला व सांस्कृतिक वैभव से सम्पन्न राजस्थान में पारम्परिक लघुचित्रण शैलियों के कई केन्द्र रहे है, जहाँ के रियासतकालीन शासकों ने अन्य कलाओं के साथ–साथ चित्रणकला को भी पूर्णरूपेण संरक्षण प्रदान किया। यही कारण है कि हाडौती रियासत में जहां कोटा–बून्दी चित्रण शैली को संरक्षण मिला तो मेंवाड़ रियासत की कलाशैली मेवाड़ कलम के रूप में जानी गई। जयपुर, किशनगढ़, अलवर उणियारा के शासकों से संरक्षित कला केन्द्र बने रहे।[1] विषय के इस रुप में जिक्र करें शेखावाटी की चित्रात्मक हवेलियों का जो मुख्यतः धनाढ्य वर्ग नगर सेठों के सांस्कृतिक प्रेम को रेखांकित करता है।

शोध अध्ययन के इस क्रम में रियासतकालीन मेवाड़ भू–क्षैत्र में अवस्थित नाथद्वारा का जिक्र करें जो न केवल वैष्णव सम्प्रदाय की प्रधान पीठ रही है अपितु कला, संगीत व साहित्य कला के प्रमुख केन्द्र के रूप में भी पहचान रही है। वैष्णव सम्प्रदाय के महाप्रभुजी के साथ ही अन्य पीठाधीश्वरों ने भी राग, भोग व श्रृंगार सेवा की परम्परा का संरक्षण कर नवीन भावरूपों को भी सेवा में सम्मिलित किया। गेय सेवा के रूप में ठाकुरजी के समक्ष विविध दर्शनों के समय अष्ठछाप कीर्तनकारों की पदावलियों का गान होता है तथा श्रृंगार भव की सेवा के रूप में ही नख–शिख तक मनमोहक श्रृंगार धराया जाता है। विशेष रूप से प्राकट्य स्वरूप के परोक्ष में चित्रों किंतु पिछवई को सुसज्जित कर सेवाभाव पूर्ण किया जाता है।[2]

ब्रज से ठाकुरजी के नाथद्वारा पधार ने के साथ ही नगर में नन्दालय भाव से ठाकुरजी की हवेली की रचना की गई। इसी के साथ वैष्णव सेवा परम्पराओं का पालन होने लगा। वैश्णव नगरी के रूप में प्रसिद्ध नाथद्वारा में 70 से ज्यादा कलाकार परिवार पिछवई व पारम्परिक चित्रण से जुड़े रहे हैं।

पिछवई उद्भव एवं विषयवस्तु – वल्लभ समप्रदाय की प्रधान पीठ के रूप में प्रसिद्ध इस नगर में तकरीबन 350 वर्षों से पिछवई चित्रण हो रहा हैं। देश भर की कला शैलियों में वैष्णव किया जाता है और ठाकुर सेवा में सुसज्जित कर श्रृंगारिक सेवा भाव रचा जाता हैं।[3] मोटे रूप में देखे तो ठाकुरजी (श्रीनाथजी) के परोक्ष भाग में चितराम की सेवा रची जाती है, जिसे पिछवई कला के रूप में जाना जाता हैं।

विषयवस्तु के रूप में देखे तो चितराम की पिछवई कला में महाभारत व गीत गोविन्द में वर्णित कृष्ण की बाल व श्रृंगारिक लीलाओं को महत्व दिया जाता है। साथ ही ऋतु, त्यौहार, पर्व आदि के अनुरूप ठाकुरजी के परोक्ष में पिछवई सुसज्जित होती हैं। पिछवई में चित्रित भावों के अनुरूप ही प्राकृत्य स्वरूप श्रृंगार धराया जाता हैं। बाल लीलाओं के साथ ही पिछवई चित्रण में वर्षभर के तीज त्यौहारों एवं उत्सव पर्व से जुड़े प्रसंगों को चित्रांकित किया जाता हैं। इनमें कृष्ण जन्म, दीपोत्सव, होली, बसंत, गणगौर, रक्षाबंधन, एकादशी व पूर्णिमा के भाव से पिछवई चित्रकार भावरूपों को जीवन्त करता हैं। गोवर्धन पूजा, बाल लीलाएं, छाक लीला व चीर हरण जैसे विषय वैश्णव सम्प्रदाय के हर काल में प्रमुखता से रूपांकित होते रहे है। श्रृंगारिक भाव से ही ठाकुर जी की राधा सहित आठसखियों के उदात्त भावरूपों को कलाकारों ने बेहद मनोभाव से संयोजित कर परम्परा का पालन कर रहे हैं।

तकनीक व रचना सौन्दर्य – सफेद लढ्ढे की सूती कपड़े पर चित्रांकित पिछवई पूणरूपेण चित्रण की विशेष तकनीक पर आधारित रही हैं। 7 गुणा 11 फीट आकार के सूती वस्त्र को धरातल पर अरारोट की लेई से चिपकाने के बाद इस पर विषय के अनुरूप कच्चा रेखांकन किया जाता है। पुनः इस पर कलम से पक्की लिखाई कर विषयानुरूप रंगांकन की तैयारी की जाती हैं। पिछवई कलाकार दशी व खनिज रंगों में गोंद मिलाकर रंगों को घोटते है। क्रमानुसार इन तैयार रंगों को चित्र की पार्श्व भूमि के साथ–साथ प्राकृतिक परिवेश एवं मानवाकृतियाँ को रंगांकित करने हैं। रंगांकन के बाद अकीक पत्थर से पूरे धरातल की घुटाई की जाती हैं जिससे रंगों का जमाव चित्र धरातल के साथ मिश्रित हो जाए।[4]

रचना सौन्दर्य के रूप में देखे तो नाथद्वारा की पिछवई चित्रण कला में भक्ति, वात्सल्य व श्रृंगारिक भावों से निपजा सौन्दर्य प्रमुख हैं। प्रकृति के नैसंर्गिक सौन्दर्य के साथ ही यहां के चित्रकारों ने नारी सौन्दर्य के भावरूपों को उदान्तता के साथ रंगांकित किया हैं।

पिछवई सेवा–बदलते परिवेश के साथ पिछवई चित्रण का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि इस कला में नवीन भावरूपों व धार्मिक विषयों का समायोजन होता रहा है। वैष्णव मंदिरो व घर के ठाकुर जी को सुसज्जित होने वाली पिछवई कला का विस्तार भी हुआ हैं तथा देश विदेश के कई कला संग्रहालयों में नाथद्वारा की पिछवई कला प्रदर्शित हैं। नाथद्वारा के पिछवई कला में कई रूप दिखाई देते हैं। खनिज रंगों से बनी पिछवई तो प्रसिद्ध है ही, ठाकुरजी की सेवा में खीप–खांप, जरी, कशीदाकारी आदि से बनी पिछवई सेवा भी धरायी जाती हैं। वल्लभ सम्प्रदाय में फाग माह में पिछवई का एक नया ही रूप दिखाई देता हैं। होली के भाव से चन्दन, चौवा, गुलाल एवं अबीर से मुखियागण प्रतिदिन श्रृंगार के दर्शन के समय अपने हाथों की चुटकियों में गुलाल भरकर ठाकुरजी के संग सुसज्जित धवल वस्त्र के पिछवई खण्ड को रंगांकित करते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि ठाकुरजी के हवेली में पिछवई सेवा को धराने के लिए मुखिया चित्रकार की नियुक्ति होती हैं। मुखिया चित्रकार के सानिध्य में ही दीपोत्सव की अवधि में पूरे मंदिर को कृष्ण की विविध लीलाओं से चित्रित किया जाता है। चित्रों का यह कार्य दशहरे के दिन से ही शुरू हो जाता है तथा 60–70 कलाकारों का समूह धनतेरस के दिन तक दीवारों को चित्रांकित करते है। प्रमुख चित्रकार– लगभग 350 वर्षो से नगर के कलाकार चित्रण की परम्परा को बनाए हुए है। ठाकुरजी जब ब्रज से नाथद्वारा(मेवाड़) पधारे तब उनके साथ अलग–अलग विधाओ में लक्ष सेवादार भी आए। इनमें प्रमुख रूप से सांचीहर, ग्वालगुर्जर, लोधा, सनाढ्य के साथ ही किर्तनकार समाज के लोग एवं चित्रकार घराने के सदस्य भी सम्मिलित रहे।

पिछवई से जुड़े प्रसिद्ध कलाकारों का उल्लेख करें तो घासीराम शर्मा, बी.जी. शर्मा एवं इन्द्रशर्मा के साथ ही राष्ट्रीय पुरुस्कार से सम्मानित द्वारका लाल शर्मा, घनश्याम शर्मा, हेमंत शर्मा, घनश्याम उस्ताद व परमानन्द शर्मा आदि नाम प्रमुख हैं। मोटे रूप में देखे तो यहां का कलाकार समाज दो भागों में विभाजित है। प्रथम श्रेणी में वे कलाकार है जो ठाकुरजी के संग यहां आए और पीढ़ियों से चित्रण कार्य से ही जीविकोपार्जन कर रहे है, इन्हें गौड ब्राहाम्ण कहा जाता है तथा मुखिया पद भी इसी समाज से चयनित होता हैं। मंदिर की चित्र सेवा में भी इनका योगदान प्रमुख होता है दूसरी श्रेणी में विश्वकर्मा समाज के लोग सम्मिलित है जो उदयपुर व मेवाड़ के छोटे–मोटे गांव कस्बों से आए और नाथद्वारा शैली में चित्रण शुरू किया यह वो समय था जब नाथद्वारा के चित्रकारो की मांग देशभर में बनी हुई थी तथा विश्वकर्मा समाज के कलाकार आदि इसे पुरा करते थे। दो समाज होने के बावजुद कलाकारों में इतना मेलजोल है कि मंदिर के चित्रण कार्य को सामूहिक रूप से ही पूर्ण करते है। वर्तमान में श्रीनगर के युवा कलाकारों की पीढ़ी पिछवई चित्रण को समर्पित होकर नवीन भावरूपों को जीवन्त करने को तत्पर हैं।

संदर्भ

1. अम्बालाल अमित, कृष्णा एज श्रीनाथजी, मेपिन इंटरनेशनल, न्यूयॉर्क 1987 पृष्ठ 18, 37, 70
2. तलवार, के एवं कल्याणकृष्ण, इंडियन पिगमेंट पेंटिग्स ऑन क्लाथ, कैलिको म्यूजियम, अहमदाबाद 1979 पृष्ठ 59, 111
3. झारी, डॉ. कृष्णदेव, अष्ठछाप और परमानन्द, शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996, पृष्ठ 8, 27, 40
4. मिश्र, डॉ. रमेशचन्द्र, वैष्णव सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव, हीरक जयंति ग्रंथ, साहित्य मंडल, नाथद्वारा 1997 पृष्ठ 31, 76
5. मेहता, डॉ. सुभाष, वल्लभ सम्प्रदायी चित्रकला के विकास में तिलकायत आचार्यो की भूमिका, हीरक जयंति ग्रंथ, साहित्य मंडल, नाथद्वारा 1997 पृष्ठ 462–463
6. वैरागी, प्रभुदास, श्री नाथद्वारा का सांस्कृतिक इतिहास, मंदिर मंडल, नाथद्वारा, 2006 पृष्ठ 21 एवं 23
7. लायन ट्रीना, द आर्टिस्ट्स ऑफ नाथद्वारा, मेपिन प्रकाशन, न्यूयॉर्क 1997, पृष्ठ 43, 76